19 तोता और इन्द्र

नरेन्द्र मालवीय

नरेन्द्र मालवीय हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार है । हिन्दी साहित्य में निबंध, कहानी, एकांकी एवं कविता में अपना योगदान दिया है । सरल और सहज भाषा उनके साहित्य की एक विशेषता रही है । मार्मिक भाषा में गहन बात को सरलता से पेश करते हैं ।

यह एक सरल और सुबोध रचना है । इस कविता को एक कहानी के आधार पर लिखा गया है । वह कहानी 'बुक ऑफ नॉलिज' से ली गई है । इसे विश्व का एक श्रेष्ठ संवाद-काव्य माना जाता है ।

सुनो भाइयो, तुम्हें सुनाते, आज एक प्राचीन कहानी ।
जो है अति सुंदर, अति अद्‌भुत, सचमुच कहानियों की रानी ॥
पुण्यभूमि काशी की महिमा, चारों दिशि में थी अति गुंजित ।
देवों सहित देवपति उसको, लखकर होते थे अति हर्षित ॥
गुजर रहे थे इन्द्र एक दिन, जब कि निकट के निर्जन वन से ।
देखा एक पेड़ अति भारी, सूखा, निर्जीवित-सा तन से ॥
उसके एक खोखले में था तोता एक बहुत ही सुंदर ।
हुआ इन्द्र को बेहद अचरज, उसको सूखे तरु पर लखकर ॥
पूछा तुरंत उन्होंने उससे - 'क्या न मूर्खता है यह भारी ।
इस सूखे तरु पर तू रहता बन करके अनजान, अनारी ॥
हरा-भरा तरु कहाँ नहीं है, क्या इस विस्तृत सुंदर वन में ?
भला यहीं रहने में तूने सोचा है क्या हित निज मन में ?'
तोता बोला - 'महाराज, यह तरु पहले था बेहद सुंदर ।
सारे वन में एकमात्र था सबसे अच्छा, सबसे मनहर ॥
जैसा था यह सबसे सुंदर, वैसा ही था यह बलशाली ।
यह ही था इस वन की शोभा, भाग्यवान, अति गौरवशाली ॥
चिड़िया, तोते, कोयल, मैना, सबको ही यह अति प्यारा था ।
महाराज, यह ही कुरूप तरु, शोभा में सबसे न्यारा था ॥
मैं जन्मा हूँ इस पर, जब इसकी शोभा थी नई-निराली ।
अतः मुझे प्राणों से भी प्यारी है इसकी डाली-डाली ॥
इसकी मोदमयी छाया में मैंने था निज होश सम्हाला ।
यह है मुझको गाना, मुसकाना, उड़ना सिखलानेवाला ॥
बचपन से ले करके अब तक इसने दी है मुझको छाया ।
मैंने हरदम इसको ही सुख-दुख का सच्चा साथी पाया ॥
किंतु आह, कुछ दिन पहले आया वन में एक शिकारी ।
उसके विष से बुझे बाण ने इस पर ढा दी आफत भारी ॥
विष के कारण सूख रहा है तब से यह तरुवर दिन-प्रतिदिन ।
अब तो इसके साथ-साथ ही मेरा भी होगा अंतिम क्षण ॥
बचपन के साथी को तजकर, भला कहीं मैं जा सकता हूँ ?

यदि जाऊँ भी, तो क्या सुख, संतोष, शांति मैं पा सकता हूँ ?
इससे अच्छा है, मैं इसके दु:ख में थोड़ा हाथ बटाऊँ ।
और अंत में सुख से इसके संग-संग मैं भी मर जाऊँ ॥'
दंग रह गये इन्द्रदेव तोते की यह सब बातें सुनकर ।
फिर, तोते से बोले वे यों तुरंत अत्यधिक हर्षित होकर-
'मैं प्रसन्न हूँ तुझसे पंछी, सुफल हुआ है तेरा जीवन ।
माँग तुरंत वर कोई मुझसे, पूर्ण करूँगा मैं इस ही क्षण ॥'
तोता बोला-'देव, यही है अभिलाषा मेरे जीवन की ।
हरा-भरा कर दें यह तरुवर, जो है शोभा सारे वन की ॥'
कहा इन्द्र ने - 'एवमस्तु !' और तरु ने फिर नवजीवन पाया ।
शोभा नई, निराली सुंदरता लेकर वह फिर लहराया ॥

शब्दार्थ

प्राचीन पुरानी **पुण्यभूमि** पवित्रभूमि **दिशि** दिशा **निर्जन** विरान **खोखला** पोला, कमजोर **अचरज** आश्चर्य **तरु** वृक्ष **निज** अपना, स्वयं **कुरूप** बदसूरत **तजकर** त्याग करके **अभिलाषा** इच्छा **लखकर** देखकर

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) इन्द्र कहाँ से गुजर रहे थे ?
(2) इन्द्र ने खोखले वृक्ष में क्या देखा ?
(3) पेड़ क्यों सूख गया था ?
(4) पेड़ पर किसने आफ़त ढा दी थी ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) सूखे पेड़ पर तोते को देख इन्द्र को क्यों आश्चर्य हुआ ?
(2) तोते ने उस सूखे वृक्ष पर रहने का कारण क्या बतलाया ? क्या आप उसे ठीक समझते हो ?
(3) तोते के उत्तर का इन्द्रदेव पर क्या प्रभाव पड़ा ? और उसका फल क्या हुआ ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) तोते ने उस पेड़ से अपने अत्यधिक लगाव के क्या-क्या कारण बतलाए हैं ?
(2) तोता और इन्द्र का संवाद अपने शब्दों में लिखिए ।

4. निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

विस्तृत, गौरवशाली, मोदमयी, एवमस्तु

5. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) जहाँ मनुष्य न हो
(2) जिसमें बल न हो
(3) देवों के अधिपति
(4) भू के पति

योग्यता-विस्तार

- इस कथा-काव्य का कहानी में रूपांतर कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अन्य कथाकाव्य ढूँढ़कर छात्रों को सुनाइए ।

●